ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 14, Issue 8, August 2024 Impact Factor 8.232 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

भारतीय पुर्नजागरण में दयानन्द सरस्वती की भूमिका

डॉ0 मोहम्मद इमरान खान

एसोसिएट प्रोफेसर–राजनीति विज्ञान

मुमताज़ पी0जी0 कॉलेज लखनऊ

दयानन्द सरस्वती ने कहा था कि विदेशी सरकार चाहे धार्मिक पक्षपातों से मुक्त, विदेशी और देशी नागरिकों के प्रति निष्पक्ष हो, वो लोगों को पूर्णतः प्रसन्नता नहीं प्रदान कर सकती, इस कथन से उनका वयक्तित्व सामने आता है। स्पष्ट है कि दयानन्द एक ऐसे चिन्तक हैं जिन्होंने भारतीय सम्मान की कीमत पर किसी भी प्रकार का समझौता करने से इन्कार कर दिया इसलिए उन्होंने आत्म सम्मान और मानसिक जागरण का अहम कार्य किया।

राजाराम मोहन राय के विपरीत दयानन्द ने भारत के गौरवपूर्ण अतीत को ओलोकित करते हुए भारतीयों को पतित अवस्था से ऊपर उठाकर भविष्य की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। दयानन्द के समर्थक यह स्वीकार करते हैं कि वे 1857 की क्रांति के उदगाता थे। दयानन्द के शिष्य नानासाहब पेशवा क्रांति के सूत्रधारों में थे। दयानन्द संघर्षमयी थे इसीलिए उन्होंने भारत के पुर्नरजागरण आन्दोलन में जीवनदायी भूमिका निभायी, उनका वयक्तित्व संघर्षशील था, उन्होंने कहा, ''यह संसार अंधकार और अज्ञान के जाल में फंसा हुआ है मैं उस श्रंखला को तोड़ने और दासों को मुक्त करने के लिए आया हूँ। उन्होंने इसाइयत की आलोचना उस समय की जब ब्रिटिश साम्राज्यवाद अपने विजयोत्कर्ष पर था।

दयानन्द ने अपने धार्मिक अन्तःकरण के क्षेत्र में शैवों के सत्ता मूलक, परम्परावादी आदेशों के सामने सर्मपण करने से इन्कार कर दिया। वे हिन्दू परम्परावाद के मोह में भी नहीं फंसे सत्य की खोज करना चाहते थे जो परमार्थ से संतुष्ट हो। उन्होंने वीरता की पूजा की कायरताक की निन्दा की। सत्य को स्वीकार किया, असत्य का परित्याग किया। वे वैदिक आदर्शवाद के समर्थकों में से एक हैं, अपनी विद्वता और वैदिक संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास से शक्ति सजो कर हिन्दू समाज के उद्धार के कार्य में उद्यत हुए। उन्होंने राजनीतिक दर्शन के क्षेत्र में किसी व्यवस्थित रचना का प्रतिपादन नहीं किया लेकिन फिर भी वे राजनीतिक

चिन्तक हैं। वे भारतीय समाज में आयी बुराइयों का निराकरण वेदों के माध्यम से चाहते थे उन्होंने ''वेदों की ओर लौटो'' का नारा दिया। उनका स्पष्ट मानना था कि भारतीयों का अधिक नुकसान पोगपंथी मठाधीधों ने किया है जो अपने लाभ के लिए जनमानस का शोषण करते हैं इसलिए इससे छुटकारा वेदों के मूल ग्रन्थ के द्वारा ही हो सकता है। इसके लिए उन्होंने 'आर्यसमाज' की स्थापना की इसके माध्यम से एकेश्वरवाद को बढ़ावा दिया यहाँ वे राजाराम के समीप दिखते हैं।

भारतीय राजनीतिक स्वत्रंता की पहली सीढ़ी को तैयार करने में दयानन्द ने अहम भूमिका निभायी। दलितों व स्त्रियों के उद्यार के लिए शिक्षा के प्रसार पर बल दिया। वास्तव में उनका उद्देश्य भारतीय जनता में ऊर्जा शक्ति का संचय करना था, जिससे वे गुलामी की मानसिकता को तोड़ने में सफल हो सकें। वो सामाजिक न्याय के प्रबल समर्थक थे, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों की पुर्नस्थापना चाहते थे, उन्होंने साम्रज्यवाद की छाति पर स्वराज का गौरवगान गाया। उनका मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता का क्रांतिघोष अज्ञानता के अंधेरे में नहीं हो सकता। ''आर्य समाज'' नामक संस्था के माध्यम से सामाजिक और शैक्षणिक क्रांति लाने का प्रयास किया। रोम्यारोला जैसे महान फ्रांसीसी इतिहासकार ने लिखा कि वस्तुतः भारत में राष्ट्रीय चेतना के पुर्नजन्म (जुनर्जनमण) की बेला में वे सर्वाधिक शक्तिशाली श्रोत थे, यह भी माना जाता है कि उनकी शिक्षाओं से प्रभावित आर्य समाज ने 1905 ई0 में बंगाल – विद्रोह का मार्ग प्रशस्त किया।

'स्वराज' और 'स्वदेशी' जैसी महत्वाकांक्षी मान्यताएँ उनकी वाणी से उस समय मुखरित हुयी जब अनेक भारतीय अंग्रेजों के पिछलग्गू बनकर भौतिक सुख भोगने की ओर उम्मुख थे। उनका आदर्श राष्ट्र बौद्धिक राष्ट्र है, जिसके विवेक और शक्ति का अदभुद सामान्जस्युक्त, तुतस्वता, दीक्षा, तप, वहम तथा यज्ञ जैसे स्तम्भ है जो आदर्श राष्ट्र के धारण करता हे। भारतीय आदर्शराष्ट्र की जो परिकल्पना दयानन्द के आँखो में थी उसमें भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों की योजनाओं का समन्यव प्रलाक्षित होता है। उन्होंने यूरोप के यद्भाकम (अहस्तक्षेप) नीति के समर्थन की जाने वाली शक्तियों के विकल्प में भारतीय प्राचीन आदर्शों

को स्थपित करने का प्रयास किया। उन्होंने आदर्श प्रजातन्त्र का समर्थन किया। उन्होंने आदर्श राजतन्त्र की रूप रेखा में धर्माय सभा विधायी सभा तथा राजार्य सभा नामक तीन अंग की बात की। वे मानते थे कि एक ही व्यक्ति कितना ही अच्छा क्यों न हो उसमें शक्तियों का केन्दीकरण नहीं होना चाहिए। निरकुंश सत्ता वैदिक सत्ता के विपरीत है। जनता की इच्छा सर्वोपरि है। वे ऐसे राजा के पक्षधर थे जो न्यायप्रिय, अन्याय नाशक, दुष्टनाशक हो।

दयानन्द की भारत के ऐतिहासिक विकास के सम्बन्ध में बड़ी आशावादी कल्पना थी। उनके विचार में महाभारत के समय से भारत का पराभाव शुरू हुआ, उन्होंने दुःखी जनता को नयी दृष्टि प्रदान की। उनके जीवन से स्पष्ट है कि सफल नेता वही हो सकता है जो अवाम को उम्मीद (आशा) और कर्म का सन्देश दे। दयानन्द की आत्मा साहस से ओतप्रोत थी। शरीर, मन तथा आत्मा की प्रचण्ड शक्ति उनके व्यक्तित्व का सार थी। दयानन्द का जीवन चरित्र तथा सन्देश भारतीय समाज में इसलिए मान्य होता गया कि उनका उद्देश्य भारतीय राष्ट्रवाद तथा हिन्दुओं की एकता को बढ़ाना है। शुरू में स्वामी जी को धर्मद्रोही कहा गया और मूर्तिपूजा का विरोध करने पर उनकी भर्तना भी की गयी उनको शत्रु भी कहा गया किन्तु आर्य समाज के द्वारा किए गए सामाजिक सुधार और शैक्षणिक कार्यो से लोगों में उनके प्रति आदर बढ़ता गया।

दयानन्द का धर्म सकीर्ण नहीं है, बल्कि उदात् दिमाग और विचारों की उपज है। वेदों में लोकतन्त्र के जिस मूल्यों का संकेत मिलता है वे उसे आदर से ग्रहण करते हैं। दयानन्द शासन की प्रथम इकाई 'ग्राम' मानते हैं, ग्राम प्रशासन पर उनके विचर मनुस्मृति से प्रभावित है इससे सत्ता के विकेन्द्रीकरण और पंचायती राजव्यवस्था की पृष्ठभूमि तैयार होती है। गाँव एक स्वातन्त्र इकाई है उसकी परम्परा और व्यवस्था में केन्द्रीय सत्ता हस्तक्षेप नहीं कर सकती। दयानन्द का चक्रवर्ती शासक भी ग्राम प्रशासन के नियन्त्रण में है। ''सत्यार्थप्रकाश' में उन्होंने विश्वसाम्राज्य की बात की इसी आधार पर उन्हे साम्राज्यवाद का पोषक माना जाता है और उनकी भावना विश्वविजय की ओर प्रेरित करती है ये विजय सैनिक नहीं नैतिक है, वे नैतिकता के पुजारी थे, भारत के नैतिक विजय में उनकी गहन आस्था थी इसीजिए उनके

साम्राज्य का स्वरूप नैतिक और आध्यात्मिक है राजनीतिक नहीं।

दयानन्द चाहते थे कि भारतीय गौरव की पताका विश्व शिखर पर फहरे उन्होंने भारत की संस्कृति को विस्मृत करने वाली पश्चिमी संस्कृति की लगातार आलोचना की, उनके विचारों में अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भी झलक मिलती है, वे विभिन्न धर्मो में एक धर्म की भावना प्रेरित करते थे और वह धर्म है ''मानवता का धर्म'' वास्तव में दयानन्द सहधर्म औश्र सहअस्तित्व भी भावना से ओत–प्रोत थे। वे अंहिसा के भी पुजारी थे, स्वयं को विष देकर मारने वाले व्यक्ति को भी क्षमा कर दिया। वे ईश्वर की प्रभुसत्ता (सर्वोचन शक्ति) को मानते थे। ईश्वरीय सत्ता के अलावा कोई अन्य सत्ता उन्हें स्वीकार्य नहीं थीं ब्रहचार्य, इन्द्रि निग्रह, अपरिग्रह आदि भावनाओं की भारतीयों के लिए आवश्क बताया।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐसे सामाजिक, राजनीतिक चिन्तक के रूप में याद किए जाते है जिन्हें हिन्दू समाज सुधारक और भारतीय वैदिक संस्कृति का संरक्षक माना जाता है। दयानन्द ने गुलामी, निराशा और घटाटोप बादलों से घिरे भारतीयों में वैदिक संस्कृति की रोशनी दे, उस ज्योति से भारतीयों की गरिमा और आभा भारत साहित विश्व में जगमगा उठी। उनके विचारों को बाद के चिन्तकों ने आगे बढ़ाया विवेकानन्द तिलक, अरविन्द घोष आदि ने भारतियों में आजादी की भावना पैदा की भारत गुलामी से आजाद भी हुआ। किन्तु स्वतन्त्रता बाद आर्य समाज की शिक्षा धीरे–धीरे मन्द पड़ने लगी पोगापन्थी ताकतें फिर मजबूत होने लगी एकेश्वरवाद और निराकार की पूजा के समर्थक कम होने लगे। धर्म और राजनीति गठजोड़े ने उनकी आत्मा को ठेस पहुँचायी। गत कई दशक से ख्यातिप्राप्त, आर्यसमाजी, स्वामी अग्निवेश, दयानन्द के उपदेश लोगों को देते रहे। किन्तु राजनीतिक धर्म में मस्त अधिकांश जनता उनको सुनने के लिए तैयार नहीं थी। किन्तु उम्मीद है कि वह समय आयेगा कि भारतीय फिर दयानन्द के उपदेश को समझेंगे इसी में भारत का हित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दयानन्द सरस्वती–सत्यार्थ प्रकाश
2. डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद वर्मा–आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक

3. डॉ0 बी0एल0 फाड़िया–भारतीय राजनीतिक चिंतक
4. $B.C.Pal - The\ sprit\ of\ Indian\ nationalism$
5. $Sunil\ Khilnani - The\ Idea\ of\ India$